ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

जिनके तप, त्याग और परिश्रम से हरयाणा प्रान्त भारत के मानचित्र पर उभर कर आया

चौधरी देवीलाल जी

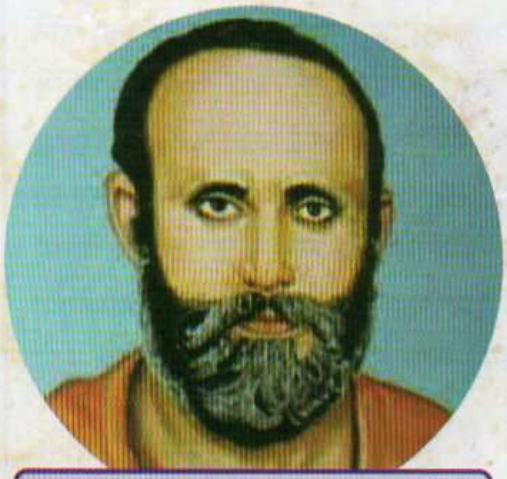

स्वामी ओमानन्द सरस्वती

पं. जगदेवसिंह सिद्धान्ती

प्रो० शेरसिंह जी

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० साहिल आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष :70 अंक : 3
नवम्बर 2022 विक्रमाब्द 2079
दयानन्दाब्द 198 कलिसंवत् 5121
सृष्टिसंवत्-1,96,08,53,123

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वेदोपदेश	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	अलीपुर षड्यन्त्र का शहीद कन्हाईलालदत्त	4
4.	मां की पुकार	7
5.	समस्या बढ़ाता राष्ट्रवादी सोच का अभाव	10
6.	तान्त्रिकों का फैलता जाल	12
7.	राजनीति में शुद्धि कौन करेगा?	14
8.	भारत विरोधी बौद्धिक आक्रमण	17
9.	मधुमेह (डायबिटीज) का उपचार	20
10.	श्रावणीपर्व सोत्साह सम्पन्न	

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क 150 रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

वेदोपदेश

ओ३म्

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः, शिशिर इन्नु रन्त्यः।।

- साम० पू० ६.३.१३.२।।

मेरे प्रभु की सृष्टि में सभी ऋतुयें रमणीय हैं। हर एक ऋतु में अपनी अपनी रमणीयता है। जो लोग प्रभु के प्रेम को नहीं जानते वे ही हर समय, हर ऋतु में असन्तुष्ट रहते हैं। गर्मी में उन्हें शीत याद आता है, पर शीत आ जाने पर वे कहते हैं'' गर्मी की ऋतु अच्छी होती है।'' घर्मकाल में वे प्रतिदिन वर्षा की प्रतीक्षा में रहते हैं परन्तु वर्षा आने पर वे बरसात से तंग आ जाते हैं। इस प्रकार उन्हें हर समय में शिकायत ही शिकायत रहती है। उन्हें कोई भी ऋतु अच्छी नहीं लगती। परन्तु प्रभु का कुछ प्रसाद पा लेने पर मुझे तो प्रत्येक ऋतु में अपने प्रभु की कोई न कोई प्रतिमा दिखायी देती है। इसलिये गर्मी में मैं सुख से गर्मी का आनन्द लेता हूं और जाड़ों में जाड़े का। वर्षा-काल में मैं खूब बरसात मनाता हूं और पतझड़ में अपने प्रभु का एक दूसरा ही सौन्दर्य पाता हूं। इस तरह मैं समय हर ऋंतु में अपने प्रभु के दर्शन करता हूं हर और देखता हूं कि प्रत्येक ऋतु अपनी नयी नयी प्रकार की रमणीयता के साथ नया नया प्रभु संदेश लाती हुई मेरे पास आ रही है।

मेरे जीवन रूपी संवत्सर में भी इसी प्रकार सब ऋतुयें आया करती हैं। कभी सुख सम्पत्ति की घड़ियां आती हैं तो कभी दुःख दारिद्र्य के लम्बे दिन व्यतीत होते हैं। कभी अति कार्य व्यग्रता का राजसिक समय वर्षों तक चलता है तो कभी काफी समय के लिये शिथिलता और दीर्घ-सूत्रिता के दिनों की बारी आती है। पर मैं उन सभी का रसास्वादन करता हूं। ये सभी रस अपने अपने समय पर प्राप्त होते हुवे मुझे प्रिय लगते हैं। इस प्रकार मैं अपने बाल्य काल के वसन्त में खूब खेला हूं, नौ जवानी की ग्रीष्म के जोशीले दिनों का तथा प्रौढ़ता की बरसात के प्रेमपूर्ण दिनों का आनन्द भी मुझे याद है, आज कल सार्वजनिक जीवन की शरद् और हेमन्त की बहार ले रहा हूं और देख रहा हूं कि वार्धक्य की शिशिर अपनी बुजुर्गी अनुभवपूर्णता और परिपक्वता की स्वर्गीयता के साथ आगे मेरी प्रतीक्षा कर रही है। निःसन्देह प्रभु की वसन्त ही नहीं किन्तु ग्रीष्म भी रमणीय है, वर्षा और इसके अनन्तर आने वाली शरद् के साथ उसकी हेमन्त तथा शिशिर भी उसी तरह रमणीय हैं।

शब्दार्थ :- (**वसन्तः**)वसन्त (**इत् नु**) निश्चय से ही (**रन्त्यः**) रमणीय है और (**ग्रीष्मः**) गर्मी की ऋतु भी (**वर्षाणि**) वर्षायें (**अनु शरदः**) उसके पीछे आने वाले शरद् के दिन (**हेमन्तः**) और हेमन्त ऋतु तथा (**शिशिरः**) पतझड़ की ऋतु भी।

******

हरयाणा का ५७ वां जन्मदिवस

वर्तमान हरयाणा प्रान्त पंजाब प्रान्त से पृथक् होकर 1 नवम्बर 1966 ई. को भारत के मानचित्र पर सुशोभित हुआ था। इसका प्राचीन नाम ब्रह्मावर्त था, इसे ही बाद में ब्रह्मर्षि नाम से भी जाना गया। मनुस्मृति में लिखा है-

सरस्वती दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
तं देवनिर्मितं देश ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते।।

सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का प्रदेश ब्रह्मावर्त कहाता है। इस देश के निवासी विद्वानों का जो श्रेष्ठ आचार-व्यवहार है वह सदाचार कहलाता है। अतः इसी देश में उत्पन्न हुए विद्वानों से पृथ्वी के सभी मानव अपने- अपने योग्य चरित्र की शिक्षा ग्रहण करें।

इस प्रदेश की यह विशेषता मुस्लिमकाल के आरम्भ तक रही है। संवत् 1384 विक्रमी सन् 1327 ई. में लिखे शिलालेख में लिखा है-

देशोऽस्ति हरियानाख्यः पृथिव्यां स्वर्गसन्निभः।
ढिल्लिकाख्या पुरी तत्र तोमरेरैस्ति निर्मिता।।

अर्थात् हरियाना प्रदेश इस धरती पर स्वर्ग के समान है। इस प्रदेश में ढिल्लिका- दिल्ली नामक एक नगरी है जिसे तोमरों ने बसाया था। एक कहावत प्रचलित है - नौ दिल्ली, दस बादली। दिल्ली नौ बार उजड़ी और बसी है। इसका पुराना नाम इन्द्रप्रस्थ था। तदनन्तर कालक्रमवश थोड़े से स्थान के भेद से इधर उधर बसती रही है, कुतुबमीनर के आसपास तोमरों द्वारा पुनरुद्धार की हुई दिल्ली की पहचान देखी जा सकती है।

इस सारे कथन का अभिप्राय है कि लाखों वर्षों तक यह हरयाणा प्रदेश मानवीय सर्वोच्च गुणों का केन्द्र रहा है। इस क्षेत्र में हजारों ऋषि-मुनि उत्पन्न हुए हैं। जिनके उपदेशों के अनुसार आचरण करके यह प्रान्त तथा इसके निवासी सदा प्रतिष्ठा के पात्र रहे हैं।

परन्तु आज इस प्रान्त में प्राचीनकाल वाला आदर्श नहीं रहा। समाचारपत्रों में जब इस प्रान्त की सूचनायें पढ़ते हैं तो सिर लज्जा से झुक जाता है। अनेक स्थानों पर बलात्कार, चोरी, डकैती, हत्या, अपहरण, शराब आदि नशों की बहुलता मेवात की ओर गोहत्या, बकरे, मुर्गे और मछली आदि अभक्ष्यों की दुकानें, नवयुवकों में नशे की आदत, गांवों में निठल्ले बैठे लोगों का ताश खेलने के दृश्य, युवाओं द्वारा जुआ खेलना और हुक्का आदि के द्वारा धूम्रपान करना आदि जीवन को नष्ट भ्रष्ट करने वाली सामग्री का प्रचलन सीमा से पार होता जा रहा है।

इन बुराइयों को दूर करने का कुछ प्रयत्न आर्यसमाज और गुरुकलों द्वारा किया जाता है, परन्तु इनकी भी एक सीमा है। ये संस्थायें उत्सवों में लोगों को बुराइयों से बचने का उपदेश करती हैं, अनेक स्थानों पर यज्ञ, धर्मोपदेश, व्यायाम,

प्राणायाम, ब्रह्मचर्य और देशभक्ति की मौखिक और क्रियात्मक शिक्षा भी दी जाती है। परन्तु आज की युवा पीढ़ी मोबाइल से चिपकी रहती है। इसके अधिक प्रयोग से मस्तिष्क और नेत्रज्योति पर दुष्प्रभाव पड़ता है। माता-पिता और अभिभावकों को चाहिये कि अपनी सन्तानों को इसका प्रयोग अधिक न करने दें।

जनता के सुधार हेतु प्रान्त के राजनेताओं, शासकों, प्रशासन अधिकारियों और अध्यापकों का भी यह कर्त्तव्य बनता है कि अपने प्रान्त के निवासियों के दोषों को दूर करके उन्हें उत्तम नागरिक बनाने में अहर्निश प्रयत्न करें, जिससे प्रान्त का नाम भी गौरव को प्राप्त करें। सरकारी और निजी विद्यालयों-महाविद्यालयों, विश्व-विद्यालयों में सदाचार आदि से संबंधित नैतिक उच्चादर्शों की शिक्षा प्रदान की जाये। अपने प्रान्त के जन्मदिवस पर सरकार को भी यह प्रयत्न करना चाहिये कि हमारा प्रान्त सभी दृष्टियों से श्रेष्ठतम बने, जिससे यह प्रान्त प्राचीन काल के उच्च गौरव को पुनः प्रकट सके।

किन्तु सरकार की परस्पर दोहरी नीति रहती है। एक ओर शराब के ठेके देना और शराब पीने के मान्यता प्राप्त अहाते की स्वीकृति प्रदान करना तथा दूसरी महानिषेध मन्त्रालय आदि विभाग स्थापित करना, मछली, सुअर और मुर्गे पालन करने को प्रोत्साहन देना आदि कार्यों से प्रतीत होता है कि चोर को कहे चोरी कर और शाह से कहे जागता रहे। यह परस्पर विरुद्ध कथन श्रेष्ठ व्यक्तियों का नहीं होता। शासक अपनी प्रजा का पिता स्थानीय होता है। जैसे पिता अपने पुत्रों को कभी भी गलत शिक्षा नहीं देता और उसके उज्ज्वल भविष्यत् हेतु सदा प्रयत्नशील रहता है , इसी भांति प्रान्त के शासक का यह कर्त्तव्य बनता है कि पुत्ररूपी अपनी प्रजा के चरित्रनिर्माण में प्रत्येक प्रकार से सहयोग करे। क्या सरकार कभी ये आंकड़े भी प्रस्तुत करती है कि हमारे प्रान्त में एक वर्ष में कितने मुर्गे मछली और सुअर मारकर खाये गये। इन निरपराध प्राणियों की हत्या को रोकने के लिए सरकार क्या कदम उठाती है। ऐसे-ऐसे अनेक कार्य हैं जिनके सुधार हेतु सरकार को आगे आकर अपने प्रान्त को देश में प्रथम स्थान प्राप्त कराने में अहर्निश प्रयत्न करना चाहिये जिससे आपका भी गौरव बढ़े। यदि नहीं किया तो सौ वर्ष बाद अखबारों की सूचनाओं के आधार पर यदि कोई लेखक हरियाणा का इतिहास लिखने का प्रयत्न करेगा तो उसे आदर्श के योग्य एक भी सूचना नहीं मिलेगी और वह यही कहेगा कि कहां है वह हरयाणा जिसके बारे में कहते थे सबसे न्यारा यह हरयाणा। जहां दूध दही का खाणा। कुंट चलनी कोई नार नहीं, सबके मुख पर लाली। जीव हिंसा जहां नहीं कराहिं, मदिरा भूखे न कोई। ईश्वर करे हमारे शासक लोग इस प्रान्त को पुनः प्राचीन गौरव प्रदान कराने की शक्ति प्राप्त कर सकें। आशा है हमारी वर्तमान भाजपा सरकार यह गौरव प्राप्त करने का सौभाग्य हस्तगत करेगी।

-विरजानन्द दैवकरणि
9416055702

अलीपुर षड्यन्त्र का शहीद कन्हाईलालदत्त

- आनन्द देव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता (संस्कृत) दिल्ली सरकार

32 मुरारीपुकुर रोड़ में एक बम का कारखाना था। जब वह पकड़ा गया तो उसी के साथ बहुत से बम, डाईनामाईट और चिट्ठियां भी पकड़ी गई। 34 आदमी पकड़े गये और षड्यन्त्र का नाम अलीपुर षड्यन्त्र पड़ गया। अभियुक्तों में से एक नरेन गौसाई मुखबिर हो गया, किन्तु अदालत में उसका बचाव होने से पहले ही दो क्रान्तिकारी नवयुवकों ने बड़ों से बिना सलाह किये ही, चोरी से जेल में पिस्तौल मंगा ली और मुखबिर का काम तमाम कर दिया। इन दोनों नवयुवकों श्री कन्हाई लाल और श्री सत्येन्द्र चाकी को फांसी की सजा हुई। अन्त में अलीपुर षड्यन्त्र में 15 आदमियों को सम्राट के विरुद्ध षड्यन्त्र करने के अपराध में सजा हुई। इन सजायाफ्तों में वारीन्द्र कुमार घोष, उल्लासकर दत्त, हेम चन्द्रदास और उपेन्द्र बनर्जी थे। 10 फरवरी 1908 को अलीपुर षड्यन्त्र का सरकारी वकील जान से मार डाला गया। 24 फरवरी सन् 1910 को अलीपुर षड्यन्त्र की अपील की सुनवाई हाईकोर्ट में हो रही थी, उस समय डी.एस.पी. को जो सरकार की तरफ से इस मुकद्दमें की देख रेख कर रहा था। दिन दहाड़े अदालत से निकलते समय गोली से मार दिया गया। इसी प्रकार की अन्य घटनायें भी हुई। कन्हाई की उस कार्यवाही से सारे बंगाल में सनसनी फैल गई थी और खुशी की लहर दौड़ गई थी। अलीपुर षड्यन्त्र में नरेन गौसाई नामक एक नौजवान जोकि मुखबिर हो गया था और 30 जून 1908 को उसे माफी दे दी गई थी। साधारण नियम के अनुसार नरेन को अभियुक्तों से हटाकर अस्पताल में रक्खा गया, जहां राजनैतिक मुकद्दमा होने के कारण उसकी अच्छी देख भाल की जाती थी ताकि वह पलट न जाय या उस पर कोई हमला न कर सके। जब नरेन इस प्रकार मुखबिर बना तो अभियुक्तों में जो नौजवान थे उनको बहुत दु:ख हुआ और उन्होंने निश्चय किया कि नरेन की किसी भी प्रकार से हत्या करेंगे। किन्तु हत्या करना सरल न था। एक तो हत्या करना जेल के बाहर ही कठिन था दूसरा हत्या करने वाले स्वयं बन्दी थे और जिसकी हत्या करनी है यदि उस पर पहरा रहता हो तो फिर तो उसकी हत्या करना और भी कठिन है। तब कन्हाई लाल और सत्येन्द्र वसु ने आपस में सलाह की और तय कि याकि नरेन की हत्या हम अवश्य करेंगे। षड्यन्त्र के नेताओं को इस विषय में इशारा किया गया किन्तु उन्होंने इस विषय में बिल्कुल भी रुचि नहीं ली और इन दोनों को हत्या करने के विषय में निरुत्साहित किया। अब वे दोनों बन्दी ही हत्या की योजना को क्रियान्वित करने में लग गये। अभियुक्तों के खाने के लिये बाहर से कटहल, मछली आदि जेल में आती थी। इन कटहल आदि

में रखकर दो पिस्तौल इन दोनों ने बाहर से मंगवाये किन्तु किसी भी जेल के व्यक्ति को इन पिस्तौलों के जेल में आने की खबर बिल्कुल नहीं लगी। जो लोग जेल में रह चुके हैं वे जानते हैं कि पैसा देने पर कोई भी वस्तु या तो जेल वार्डर या स्वयं जेलर स्वयं भी यं वस्तुएं जेल में तब भी प्राप्त करते थे और अब भी कराते हैं। इसके अतिरिक्त क्रान्तिकारियों का जनता में सम्मान भी था।

जब हथियार जेल में पहुंच गये तब विचार किया गया कि नरेन के पास कैसे पहुंचा जाय, क्योंकि जेल में एक वार्ड से दूसरे वार्ड में जासकना अत्यन्त कठिन था। सत्येन्द्र ने खांसी की बीमारी का बहाना बनाया और अस्पताल पहुंच गया। इसके दों एक दिन बाद कन्हाई लाल ने भी पेट में दर्द होने की शिकायत की और वह भी कहराता हुआ हस्तपाल में पहुंच गया। अस्पताल में पहुंचते ही कन्हाई लाल बड़े जोर जोर से कहराने लगा। तब डाक्टरों ने समझा कि यह तो दो चार दिन ही जीवित रहेगा। किन्तु उसका असली उद्देश्य था कि सत्येन्द्र को पता लग जाय कि कन्हाई लाल भी हस्पताल में आ गया है और अब नरेन का काम तमाम कर देना चाहिये।

उधर सत्येन्द्र हस्पताल में आने के बाद से बराबर यह दिखला रहा था कि वह अब जीवन से उकता गया है और अपने साथियों से नाराज है। तब उन्होंने मुखबिर नरेन को खबर भिजवाई कि वे दोनों भी मुखबिर बनना चाहते हैं। नरेन और जेल अधिकारी सत्येन्द्र के दिखावे से इतने प्रभावित हुए कि 31 अगस्त को नरेन को एक जेल सार्जेन्ट की संरक्षता में सत्येन्द्र से मिलने भेज दिया। जैसे ही नरेन इन की गोली की मार की सीमा में आया। सत्येन्द्र ने गोली चला दी। गोली नरेन के पैर में तो लगी किन्तु नरेन गिरा नहीं। किन्तु उस समय कन्हाई भी आसपास था और उसके पास भी भरा हुआ रिवाल्वर था। जब नरेन इनसे बचने के लिये भागकर हस्पताल से बाहर जाने लगा तब कन्हाई ने उसका पीछा किया। तब किसी व्यक्ति ने फाटक खोल दिया और साथ ही इशारा भी कर दिया कि नरेन इधर गया है। तब कन्हाई शेर की तरह झपट के नरेन के पास गया और रिवाल्वर की सारी गोलियां उस पर दाग दी। इस प्रकार साम्राज्यवाद के गढ में साम्राज्यवादियों का पीठू देशद्रोही नरेन दिन दहाड़े मार डाला गया।

उसी समय इन दोनों वीर क्रान्तिकारियों को बन्दी बना लिया और इन पर अभियोग चलाया गया और इन दोनों को फांसी की सजा सुनाई गई। 10 नवम्बर सन् 1908 के दिन इन दोनों को फांसी दे दी गई।

शहीद के दर्शन - श्री मोतीलाल राय उस समय के बंगाल के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी और लेखक थे। श्री राय ने अपनी पुस्तक में उनके अन्तिम दर्शन का मार्मिक वर्णन इस प्रकार किया है:-

पांच छः व्यक्तियों को भीतर जाने की अनुमति मिली। एक गौरे ने हमसे जानना चाहा कि कौन कौन भीतर जाना चाहते हैं? आशुबाबू (कन्हाई के बड़े भाई) मैं और कन्हाई परिवार के तीन व्यक्ति थर-थर कांपते हुए उस गौरे के पीछे हो लिये। शोक और दुःख से हम सिहर रहे थे। लोहे की फाटकों को पार कर हम लोग जेल में दाखिल हुये, यान्त्रिक पुतले की भांति हम उस गौरे के पीछे पीछे चल रहे थे। एकाएक वह गोरा रुक गया और उसने अंगुली के इशारे से हमें एक कोठरी दिखा दी। वहां सिर से पैर तक ढकी हुई एक लाश पड़ी थी। यही कन्हाई का शव था। हम लोगों ने शव उठाकर कोठरी के आंगन में रख दिया किन्तु किसी की भी हिम्मत नहीं होती थी कि शव से कम्बल उतारे। आशू बाबू की आंखों से आंसुओं की धारा बह निकली। तब एक एक करके सभी लोग रोने लगे। उसी समय गोरा बोल उठा- ''आप रोते क्यों हों?'' जिस देश में ऐसे वीर पैदा होते हैं। वह देश धन्य है। मरेंगे तो सभी किन्तु ऐसी मौत कितने मरते हैं?

हमने विस्मित नेत्रों से आंख उठाकर उस कर्मचारी को देखा तो पता चला कि उसकी आंखों से भी आंसू टपक रहे हैं। उसने कहा- मैं इस जेल का जेलर हूं। कन्हाई के साथ मेरी खूब बातें होती थी। फांसी की सजा सुनाये जाने के बाद से उसकी खुशी की कोई पारावार न था। कल शाम उसके चेहरे पर मैंने जो मोहिनी हंसी देखी, मैं उसको कभी नहीं भूलूंगा। मैंने कहा -'' कन्हाई आज हंस रहे हो, किन्तु कल मृत्यु की कालिमा से तुम्हारे हंसते हुए होठ काले पड़ जायेगें।''

दुर्भाग्य से कन्हाई को फांसी लगते समय मैं भी वहां मौजूद था। कन्हाई की आंखों पर पट्टी बांध दी गई थी। वह शिकंजे में कसा जाने वाला था, ठीक उसी समय कन्हाई ने घूमकर मेरी तरफ संकेत किया और कहा - '' क्यों मिस्टर! इस समय मैं कैसा लग रहा हूं? ओह! यह वीरता, इस प्रकार की वीरता का होना रक्त-मांस के मानवों के लिये संभव नहीं है।

हमने चकित होकर ये सब बातें सुनी। इसके बाद उढाये हुए कम्बल को उठाकर देखा। कन्हाईलाल के उस दिव्य रूप के वर्णन करने की भाषा मेरे पास नहीं है। चौड़ा माथा, लम्बे बालों से ढका हुआ, अधखुले नेत्रों से अमृत ढलक रहा था, कसे हुये हाथों से संकल्प की रेखा फूट पड़ती थी। मुट्ठियां भिची हुई थी। आश्चर्य कि कन्हाई के किसी भी अंग में विभित्सता के चिन्ह् न थे। केवल दोनों कंधे फांसी की रस्सी की रगड़ से दब गये थे। मुख पर विकृति न थी। कौन ऐसा अभागा है, जो इस मृत्यु पर ईर्ष्या न करेगा।

कन्हाई की अन्तिम यात्रा में हजारों लोग शामिल हुए। जब उसकी लाश जलकर राख हो गई तब लोगों ने उस राख को गंडा ताबीज बनाने के लिये लूट लिया। **ऐसे वीर देशभक्त को शतशः नमन।**

अस्थल बोहर रोहतक की गरिमामयी गद्दी को ठुकराकर भारत की स्वतंत्रता हेतु जेल की यातनायें सहने वाले वीर की आप बीती कहानी -

मां की पुकार

-महन्त चन्द्रनाथ योगी

दिसम्बर 1931 भी खत्म हो चला। मैं हरद्वार से वापिस आकर फिर पुलिस के आने की राह देखने लगा। रामपुर के थानेदार ने इस रिपोर्ट के साथ वारंट रोहतक वापिस लौटा दिया था कि मुलजम हमारे इलाके में नहीं है और फिर वह लौट कर भी नहीं आया। सन् 1932 के जनवरी की 4 तारीख हो गई। मैं रामपुर की तरफ देखते-देखते तंग आ गया। मेरे जी में आई- मैं खुद ही क्यों न थाने में हाजर हो जाऊं और कह दूं लो मुझे गिरफ्तार करके रोहतक पहुंचा दो। इससे दो लाभ होंगे। एक तो मेरी रोज की चिन्ता मिट जायेगी और दूसरी मेरे इस साहस का थाने वालों पर नैतिक प्रभाव पड़ेगा। मैंने अगले रोज ऐसा ही करने का निश्चय कर लिया। लेकिन मेरे वहां जाने से पहले ही मुझे खबर मिली की महात्मा गांधी कल गिरफ्तार हो गये, जिसका मतलब था आन्दोलन फिर शुरु हो गया। एका एक मेरी मनोवृत्ति पलट गई। मैंने सोचा अब जेल में यों ही नहीं, कुछ करके जेल में चलना चाहिये। मेरा वारंट तो निकल ही चुका था। इधर लाला सुगनचन्द, बूलचन्द, ठाकुर सूबेसिंह, पं. कन्हैयालाल आदि कार्यकर्त्ताओं को नोटिस तामील हुए कि वे आन्दोलन में भाग न ले सकें। लेकिन फिर भी यह निश्चय किया गया कि अब की बार तहसील की सारी शक्ति टाऊन पर लगा दी जाये। अतएव मैं घाटहेड़े के लाला सुगनचन्द को साथ लेकर वालंटियर भरती करने लगा।

इलाके भर में घूम कर हमने 15 दिन के अन्दर साधारणतया 60 और विशेषतया 30 वालंटियर तैयार किये। इन सब के लिए लाल वर्दी बनवाई गई थी और उन्हें बांटने के वास्ते भगवान्पुर में लाला जनार्दनदास के घर पर मीटिंग होना तै पाया था। ये वर्दियां लाला सुगनचन्द ने अपने गांव के उत्साही कांग्रेसी दर्जियों से तैयार कराई थी। किसी मुखबिर ने हाकिम इलाके को इस बात की रिपोर्ट कर दी और उसने थानेदार रामपुर को सख्त हुक्म भेजा कि शीघ्र छापा मार कर उन्हें काबू में कर लिया जाये।

इस समय कांग्रेस गैर कानूनी संस्था घोषित की जा चुकी थी। उसमें काम करना अथवा उसकी किसी भी प्रकार की सहायता करना अपराध समझा जाता था। अतएव इस प्रकार बागी जत्थे की तैयारी की सूचना मिलते ही पुलिस ने लाला सुगनचन्द जी के मकान को आ घेरा। यद्यपि उन्हें पुलिस की इस दौड़-धूप का कुछ भी पता नहीं था तथापि उन वर्दियों को कहार की बहंगी में रखवा कर थोड़ी ही देर पहले गांव से बाहर हो चुके थे। दुर्भाग्यवश यदि बीस मिनट की भी देरी हो जाती तो सब करा-कराया व्यर्थ हो जाता। पुलिस को राष्ट्रीय झंडे के सिवा

उस मकान में तो कुछ न मिला, पर दर्जियों की दुकान पर पड़े कतरनों के आधार पर पुलिस ने उनको तंग करना शुरु किया। पुलिस कहती थी तुमने बागियों की वर्दी क्यों तैयार की?

दर्जियों ने बड़े साहस से उत्तर दिया- हम बागी वागी कुछ नहीं जानतै, हमारा काम कपड़े सीने का है, कोई भी सिला सकता है। अगर हमारा ऐसा करना अपराध है तो हमें गिरफ्तार कर लो।

आखिर कुछ भी न हुआ और पुलिस खाली हाथ चली गई। कुछ ही कदम चलने पर एक कुपूत ने पुलिस को बतलाया कि आज इन लोगों की कहीं पर मीटिंग होने वाली है, ये कपड़े भी वालंटियरों को बांटने के लिए वहां भेजे गये हैं। पुलिस ने फिर दर्जियों को तंग करना शुरु किया और यह पूछा कि सुगनचन्द कहां गया है? महाशय मुंशीराम ने अपने सरल स्वभावानुसार यद्यपि सत्य ही बतला दिया था कि भगवान्पुर गया है। लेकिन सौभाग्य से पुलिस के दिमाग में यह बात नहीं बैठी। उसने सोचा भला एक कांग्रेसी अपनी पार्टी का अता पता कैसे बता सकता है। बस एक तो सही बात थी, दूसरे शाम हो चली थी और तीसरे भगवान्पुर इस पुलिस के इलाके से बाहर था। अत एव वह वापिस रामपुर को लौट गई। अगर वह जरा सी हिम्मत और दिखाती तो ठीक मौके पर पहुंचती, जिससे हमारी सारी योजना विफल हो सकती थी। लेकिन मक्कारी से भरा हुआ भारतीय पुलिस का दिमाग यह कबूल ही नहीं कर सकता कि कोई सत्य भी बोल सकता है।

खैर कुछ भी हो, पुलिस की इस उलटी सूझ से हम लोग खतरे से बच गये थे। हां! इतना अवश्य हुआ कि इस थानेदार ने एक सिपाही रात्रि मे ही बड़गांव थाने में भेजकर हमारी कार्यवाही की सूचना दे दी थी, लेकिन संयोग की बात देखिये वहां की पुलिस भी रात को न आकर सुबह उस समय आई जब कि हमारा जत्था देवबन्द को रवाना होकर इस इलाके से बाहर निकल चुका था। इस प्रकार जिस लालकुर्ती जत्थे की शहर में कई दिन से अफवाह उड़ चुकी थी, आज ठीक तारीख पर वह बाजार में आ धमका। अधिकारियों में खलबली मच गई। सारे जिले की दृष्टि देवबन्द की तरफ खिंच गई। जिन-जिन इलाकों से होकर यह जत्था आया था, उन-उन के थानेदारों पर खूब डांट पड़ी, उन्होंने बीड़ा चबाया और वे छाया की तरह मेरे पीछे लग गये।

हमारी मंडली में यह तय पाया था कि लाला जनार्दनदास, ठाकुर मकमूलसिंह और मैं तीनों वालंटियर भरती करें और मौजूदा जत्था लाला सुगनचन्द जी के नायकत्व में पिकेटिंग करे। स्मरण रहे लाला सुगनचन्द जी पर नोटिस भी तामील हो चुका था, जिसमें लिखा था अगर कांग्रेस की किसी भी कार्यवाही में भाग लिया तो दो साल सख्त सजा तथा पांच सौ रुपये तक जुर्माना हो सकता है। यह नौजवान बहादुर बनिया

पिकेटिंग के लिए जत्थे का नायक बन कर ही यहां नहीं आया था, बल्कि उस नोटिस की पाबन्दी को तोड़ने भी आया था। अत एव इस प्रकार एक बनिये का इतना साहस देखकर इलाके के हाकिम नुरूल हुसन की आंखों में खून उतर आया। सहारनपुर से लठबन्द सिपाही बुलाये गये। 23 जनवरी 1932 का वह दिन देवबन्द के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। जिस दिन खूब जोर-जोर से बेंत हिलाते हुए मारो-मारो की रट लगाने वाले इस मियां साहब ने निहत्थे देशसेवकों का खून बहाया था। अगर रणदेवी को रक्त प्रिय है तो देवबन्द की देवी को प्रसन्न हो जाना चाहिये। कारण कि उस रोज प्रात:काल का समय था और ये देश दीवाने लोग देवीकुण्ड पर ठीक उसके मन्दिर के सामने नहाते समय यह रक्तसिंचन कर रहे थे। देवि! इस भेंट से प्रसन्न हो, समझ रख तेरे ऊपर एक बड़ा भारी उत्तरदायित्व आ पड़ा है। यदि अधिक नहीं तो सिर्फ देवबन्द के नवयुवकों को वह दिव्य दृष्टि दे जिससें वे इस दु:खद घटना को हमेशा अपने सामने खड़ी देखते रहें। हे देवि! क्या यह तुच्छ इच्छा स्वीकृत होगी? समझ रख, यह उस भेंट की कोई बड़ी सी कीमत नहीं है। आह! वह पिचहत्तर वर्ष का बूढ़ा ठाकुर करतार सिंह, जिसका सिर फूट गया था और वह खून से लथपथ हो गया था, वे दयाशंकर, रामशरण, करतारसिंह आदि लड़के जो खून से लथपथ हो गये थे। वह जत्थेदार सुगनचन्द जिसको खास तौर से घायल किया गया था और जिसकी बांह टूट जाने के कारण उसे दो मास जेल हस्पताल में तड़फना पड़ा था।

बूढ़े का व्यंग्य - अब की बार सरकार ने पहले से ही अपनी सारी शक्ति खर्च करके ऐसे-ऐसे भयंकर आर्डिनेंस जारी कर दिये थे, जिनके कारण आश्रम स्थापित करना कठिन हो गया था। अत एव स्वयंसेवकों को शहर में कहां और कैसे ठहराया जाये, यह एक समस्या थी, जिसका हल होना था तो मुश्किल पर असंभव नहीं। इसीलिये उनको टुकड़ों में विभक्त करके बगीचों, खेतों तथा शहर के गुप्त घरों में छिपा रखने और नियत समय पर पिकेटिंग के वास्ते बाजारों में उपस्थित करने का निश्चय किया गया। बाहर से भेजे गये स्वयंसेवकों को कहां और कैसे ठहराया गया तथा पुलिस को उनके साथ कैसा वर्ताव रहा इत्यादि समाचार मुझे देने तथा मेरे समाचार शहर वालों के पास पहुंचाने के वास्ते एक आदमी नियत किया गया था।

पहले रोज पुलिस ने कोई हस्तपेक्ष नहीं किया जिससे धरणा निर्विघ्न होता रहा। यह समाचार सुनकर जहां अपनी सफलता पर मैं फूल उठा था वहां अगले रोज की जत्थे की खून खराबों वाली घटना ने मेरे उत्साह को तहस-नहस कर दिया।

****

समस्या बढ़ाता राष्ट्रवादी सोच का अभाव

लेखकः- आर. विक्रमसिंह

हमारे देश में कुछ समूहों, वर्गों और राजनीतिक एवं गैर राजनीतिक संगठनों में राष्ट्रवाद का अभाव ही हमारी कई समस्याओं की जड़ है। देशवासियों में प्रबल राष्ट्रवाद की भावना जगाकर अब तक हम वह सब कुछ हासिल कर सकते थे, जिनका सपना हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने देखा था। यदि आपके पास धन है तो कोई जरूरी नहीं कि प्रबल राष्ट्रदृष्टि भी हो। हमारे क्रान्तिकारियों को धन चाहिए था। मजबूरी में उन्हें अंग्रेजों का खजाना लूटना पड़ा। कोई बिड़ला, कोई डालमिया या कोई भी अनाम भामाशाह उन्हें धन दे रहा होता तो क्रान्तिकारी आंदोलन नए स्तरों पर जाता, पर देश का जनमानस गांधी को महात्मा मान कर उधर चला गया। जज्बा हो, विचार हो, पर धन न हो तो कुछ न हो पाएगा। यह बड़ा संकट है।

हम इससे अवगत हैं कि दुनिया भर की तमाम ईसाई मिशनरियां भारत में छल-कपट से मतांतरण के लिए बेहताशा धन भेजती हैं। इस मतांतरण के प्रतिकार के लिए देश में न तो कोई समर्थ संस्था है और न ही अभियान। हमारे मंदिरों का धन इस प्रतिकार में लग सकता है, लेकिन अधिकांश बड़े मंदिर राज्य सरकारों के कब्जे में हैं और वे उनका धन अपने हिसाब से खर्च करती हैं। हम इससे आवगत हैं, लेकिन कुछ कर नहीं पा रहे। हमारा संविधान सांस्कृतिक जागरण का संवाहक एवं पक्षधर न होकर निर्विकार है। वह उस भारतीय जनता की तरह है, जो शताब्दियों से कहती रही है, 'कोऊ नृप होय हमें का हानि।' समझौते से हुए सत्ता हस्तांतरण को आजादी मानने के संकट अलग हैं। देश के संघर्ष, बलिदान, धर्म परंपरा से कोई कोर समूह विकसित नहीं हुआ, जो राष्ट्रीयता के विकास के प्रति समर्पित हो और राष्ट्र के शत्रुओं को लक्षित कर सके। जों विदेशी विचारों का सहयोगी राष्ट्रशत्रु समूह है, वह हमें तोड़ रहा है और हम हैं कि सहअस्तित्व के लिए बेचैन हैं ।

नूपुर शर्मा ने जो कहा और जिसे लेकर देश-दुनिया में हंगामा मचा, वह उन्होंने महादेव के अनादर के प्रतिकार में कहा, लेकिन इसे हम देश-दुनिया के समक्ष सही तरह स्पष्ट नहीं कर सके और इसीलिए कई इस्लामी देशों ने हमें आंख दिखाई। हम यह भी नहीं बता सके कि शिवलिंग को लेकर कैसी भद्दी टिप्पणियां की गई और किस तरह उसका उपहास उड़ाया गया। नूपुर शर्मा ने जो बात कहने की कोशिश की; उसका उल्लेख तो हदीसों में है और उसकी चर्चा न जाने कितने मौलवी करते रहे हैं। मूल संकट यह है कि किताब पढ़ो मत, उसका संदर्भ या उद्धरण न दो और अर्थ तो बिल्कुल मत जानो। जो 'सिर तन से जुदा' नारे के साथ सड़कों पर उतरे और अभी भी धमकियां देने में लगे हुए हैं, वे अपने समाज को भी अपनी पवित्र पुस्तकों का अर्थ नहीं बताते। अनुवाद मूल से अलग जानबूझकर किए जाते हैं। वे इतना आतंक

पैदा कर देना चाहते हैं कि हम वापस समझौतापरस्ती के युग में पहुंच जायें। वे यह चाहते है कि कोई भी उनकी किताबों के वही अर्थ जाने, जो वह उन्हें बता रहे हैं। अब जो किताबों में कहा गया है, उसे पढ़ना-बताना ईशानिंदा कैसे है? समस्या यह है कि ऐसे प्रश्नों को कोई भी संबोधित नहीं करना चाहता। हमारी मूल समस्या राष्ट्रवादी समूहों का अभाव है। जो कुछ ऐसे समूह दिखते हैं, वे सीमित दृष्टि रखते हैं या इतिहासजीवी बनकर अपनी जातियों की श्रेष्ठता में डूबे रहते हैं। सबका अपना-अपना भारत है। वे सोच नहीं पाते कि जो शेष भारत है, वह किस जातीय श्रेष्ठता का अभिमान करे, जबकि वही तो मुख्य भारत है। वह हाशिये पर रहा है। उसे ही सशक्त करना है। राष्ट्रीय शक्ति वहीं से आकार लेगी।

इस समय जो जबरदस्त प्रोपगंडा चल रहा है, उसके प्रभाव से हम अनजान नहीं हो सकते। आज यह कहीं अधिक आवश्यक है कि हम राष्ट्रविरोधियों और उनके सत्तालोलुप सहयोगियों की मंशा को समझें। राष्ट्रवादी राजनीति का संकट यह है कि वह भी सत्ता को अंतिम साध्य मान लेती हैं, जब कि सत्ता एक माध्यम या साधन है। लक्ष्य अभी बहुत आगे है। वास्तव में हमारी समस्या दूसरी है। क्या आप उस कोर राष्ट्रीय समूह के प्रति श्रद्धा भाव रखते हैं जिसमें चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, राजेंद्रनाथ लाहिड़ी आदि थे? कभी मेजर शैतान सिंह और उनके बहादुर सैनिकों को रेजांग ला में चीनी सेना के सामने बलिदान का आखिरी मोर्चा लगाने के बारे में जाना है? आप कहीं जातीय अभिमान में डूबे, राष्ट्र के महापुरुषों को अपनी-अपनी जातियों के खांचे में बांट कर अपना जिंदाबाद करने वाले लोग तो नहीं हैं?

हम अपनी 75 साल की लोकतांत्रिक यात्रा में जा तो कहीं और रहे थे, लेकिन पहुंच कहीं और गए। राष्ट्रवादी समूहों के अभाव के कारण समस्याओं के ठोस समाधान के विकल्पों की चर्चा भी नहीं हो पाती। चर्चाएं भी अत्यंत प्रतिबद्ध समूहों में ही संभव है। संकट यही है कि प्रतिबद्धता, वह भविष्यदृष्टि, वह कर्मठता, वह विवेकपूर्ण भारतीयता कहां है, जिसकी आज सबसे अधिक आवश्यकता है। समुद्र मंथन में देव दानव वहीं पर रुक सकते थे, जब समृद्धि, वैभव और धन का प्रतीक लक्ष्मी का आगमन हुआ कि अब बहुत हो गया, लेकिन वे तब तक लगे रहे जब तक अमृत तत्व प्रकट नहीं हो गया। हमारा समुद्र मंथन तो अभी प्रारंभ भी नहीं हुआ। आजादी से पहले ही कलश दानव ले उड़े। वह आजादी कौन सी है जिसमें समग्र भारतीयता का विकास न हो सका? वह आजादी कहां से थी जिसमें सुविधाजीवियों का राज आ गया? जब तक धर्म संस्कृति की पृष्ठभूमि में नव विकसित वैचारिक समुद्र मंथन से कोर राष्ट्रवाद का अमृत न निकले, तब तक स्वतंत्रता के समुद्र मंथन से विश्राम का कोई प्रश्न नहीं है। 'चलो चलो, क्योंकि अभी वह मंजिल नहीं आई।'

(लेखक पूर्व सैनिक एवं पूर्व प्रशासक है)

तान्त्रिकों का फैलता जाल

-डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

ऋषि दयानन्द ने अन्धविश्वास व पाखण्डों से दूर रहने को कहा उन्होंने भागवत पुराण तथा पुराणों में जो अवैदिक मान्याताएं भरी पड़ी हैं, उनकी जनता के सामने पोल खोली। पुराणों में भारतीय पुरातन संस्कृति को धूमिल किया गया है। श्रीकृष्ण का चरित्र तो अत्यधिक विकृत करके रखा हुआ है। ऋषियों को मछली मकड़ी तथा अन्य जन्तुओं कीटों से उत्पन्न बताया है। इसी प्रकार से अनेक कमियां है, इन पुराणों में और सबसे भयानक रोग है मूर्ति पूजा। मूर्ति पूजा अवैदिक है एक अन्धविश्वास है इन पाखण्ड पूर्ण बातों से समाज अवनति की ओर चलता है।

आज गांव व नगरों तथा कस्बों आदि में भूत-प्रेत, झांक फूंक, तांत्रिक कर्मों का बहुत बड़ा जाल फैला हुआ है जो कि विज्ञान के विपरीत अवैदिक कर्म हैं, झाड़-फूंक वाले जितने भी तांत्रिक आदि कर्म हैं इनसे अज्ञान बढ़ कर दुष्कर्म और अधिक बढ़ जाते हैं। ईर्ष्या द्वेष लड़ाई-झगड़े बढ़ कर दु:ख बढ़ जाते हैं, दरिद्रता आती है।

आज भारत में अनेक स्थान हैं जहां इस प्रकार के मेले तक लगते हैं। जहां झांड़ फूंक वालों की भीड़ रहती है, भूत-प्रेत उतारने वाले अपनी अपनी दुकानें सजाकर बैठते हैं। अब साधारण जनता भोले भाले लोग जिनके मन में वेद के ज्ञान का प्रकाश ही नहीं ऐसे लोग वहां बहुत जाते हैं। ये लोग पाखण्ड अन्धविश्वासों में ही रहते हैं। इस कार्य में बलि भी दी जाती है। मुर्गा, बकरा, भैंसा और यहां तक कि मनुष्य के बच्चे उठाकर उनकी भी बलि दे दी जाती है। ऐसे दुष्कर्मियों में ऐसी स्त्रियां अधिक होती हैं, जिनके बच्चे नहीं होते, दौरे पड़ते हों, किसी का अनिष्ट करने की दुर्भावना हो, अमीर बनने की चाह हो, लम्बी बिमारी हो या लड़ाई झगड़ा हो, औरत अपने पति को वश में रखने हेतु, सास, बहू एक दूसरे को वश में रखने आदि अनेक प्रकार के लोभ व लालच पाखण्डों हेतु ऐसे कर्म व कृत्य करते कराते हैं। अज्ञानी, अनपढ़, धूर्त व मूर्ख, लोभी, लालची, निकम्मे, दूसरों का अहित चाहने वाले लोग ऐसे तान्त्रिक कर्मों में फंस जाते हैं तथा इनका जाल ऐसे स्त्री-पुरुष परिवारों पाखण्डियों द्वारा एक से दूसरे से तीसरे तक सम्पर्क द्वारा पहुंचता है।

कहीं यदि कोई क्षति हो गई, मृत्यु हो गई, बिमारी हो गई तब ऐसे में वे तांत्रिक अपना शिष्य वहां भेजते हैं, पड़ोसी या मिलने वाले के द्वारा कहलवाते हैं कि तुम्हारे यहां ग्रह दोष है, बृहस्पति, शनि रूठा हुआ है, इस दोष को अमुक व्यक्ति झाड़-फूंक द्वारा दूर कर सकता है। कुछ

दान दक्षिणा तो देना ही होगा। कोई कहेगा कि भूत-प्रेत का चक्कर है, हवा का चक्कर है, तुम्हारे देवता रूठे हैं, इस प्रकार अज्ञानी लोगों को ये लोग भ्रमित कर अपने जाल में फंसा लेते हैं और यह भी कहते हैं कि किसी को बताना मत। मुरादाबाद में चार मजार हैं, वहां प्रतिवर्ष बडे- बड़े मेले लगते हैं, सहस्रों लोग जहां झाड़ फूंक व तान्त्रिक कर्मों के लिए ही जाते हैं। मजार जिस पर चादर चढ़ाते व अपनी मनोकामना पूरी होने के लिए मन्नत करते हैं, सहारनपुर में जो नौ मजार पीर है जहां प्रतिवर्ष मेला लगता है लोग वहां चादर चढ़ाने आते हैं यहां तान्त्रिक अपनी दुकान चलाते हैं। ऐसे मजार पीर स्थान स्थान पर मिल जाएंगे। आसाम, लद्दाख, उत्तरांचल, उ.प्र., म. प्र., हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, बिहार, बंगाल में अधिकांश स्थानों पर झाड़ फूंक होती है, मजारों पर लोग जाते हैं।

भरतपुर में भी ऐसा स्थान है जहां मस्तिष्क रोगी बड़ी संख्या में झाड़ फूंक कराने पहुंचते हैं, वहां तान्त्रिक कर्म भी होते हैं, परन्तु यह सब अन्धविश्वास है, अनेक रोगी यहां आकर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं क्योंकि यह अच्छे हॉस्पिटल आदि से तान्त्रिक कर्म हेतु लाते हैं और चिकित्सा के अभाव में उनकी मृत्यु हो जाती है।

तान्त्रिक कर्म मात्र एक अन्धविश्वास है, तान्त्रिक लोग शरीर पर कालिख पोत, सिर पर जटा बढ़ाकर बालों को फैला लेते व भांति भांति के रूप रचते हैं, जो डरावने लगते हैं, हाथ में मनुष्य का कपाल रखते फिरते हैं भांति भांति की आवाज निकालते हैं। झाड़-फूंक कराने वाले को भय दिखाते हैं, तू कहां से आया, कहां रहता है, तुझे जाना पड़ेगा ऐसे ऐसे वाक्य बोलते हैं दिमाग से अस्वस्थ व्यक्ति भी कुछ का कुछ बोल पड़ता है। यह कोई वैज्ञानिक कर्म नहीं है न ज्ञान विज्ञान का कोई विषय है मात्र अन्धविश्वास पाखण्ड है इसका जाल चारों ओर फैला हुआ है। स्थान स्थान पर गांव गांव में तान्त्रिक मिल जाएंगे।

तान्त्रिक और तान्त्रिक कर्म समाज के शत्रु हैं मानवता के शत्रु हैं समाज में अज्ञानता बढ़ती है, दुराचार बढ़ते हैं बलिप्रथा को बढ़ावा मिलता है, घरों में, आपस में भेदभाव बढ़ता है। ईर्ष्या व द्वेष बढ़ते है, ऐसे दुष्कर्मों से सावधान रहना चाहिए। आर्यसमाज को भी चाहिए कि झाड़-फूंक तान्त्रिक कर्म, भूत-प्रेत, हवा, वायु का चक्कर इन सबका विरोध करें, जनता को इसके दुष्प्रभावों से जागरूक करना चाहिए, तान्त्रिक कर्म एक अज्ञान व अन्धविश्वास है, सरकार को भी चाहिए कि ऐसे तान्त्रिकों, स्थानों व दुष्कर्मों पर रोक लगाएं।

गली नं. 2, चन्द्रलोक कालोनी
खुर्जा- पिन - 203131

राजनीति में शुद्धि कौन करेगा?

—स्व. श्री पं. प्रकाशवीर शास्त्री

सक्रिय राजनीति में किस प्रकार आर्यसमाज का हाथ होना चाहिए? यह चर्चा साधिकार भाषा में तो मैं नहीं कह सकता कि कब से विचार का विषय बन रही है, क्योंकि आर्यसमाज के मंच से मेरा संबंध केवल 16 वर्ष का ही है। इससे पूर्व में ज्वालापुर गुरुकुल में पढ़ता था और एक विद्यार्थी के रूप में आर्य समाज की गति-विधियों को दूर से देखता रहता था।

अखिल भारतीय आर्य महा सम्मेलनों में भी मैं गोगापुर से हैदराबाद तक सब में सम्मिलित हुआ हूं। गोगापुर और देहली के आर्य महासम्मेलन तो विशेष रूप से हैदराबाद सत्याग्रह और सिन्ध में सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुल्लास पर प्रतिबन्ध को लेकर हुए थे। देहली महासम्मेलन के समय भारत विभाजन की चर्चा जोरों पर चल पड़ी थी। उस सम्मेलन में उस पर भी विचार किया गया था। उसके बाद कलकत्ता, मेरठ और हैदराबाद में आर्य सम्मेलन हुए, इन सब सम्मेलनों में यह चर्चा बड़े उग्ररूप में रही कि सक्रिय राजनीति को प्रभावित करने सम्बन्धी अपनी नीति का हम स्पष्ट निर्णय करें। मेरठ में तो दो दिन तक निरन्तर इस पर विवाद चला। आर्यसमाज के प्रमुखतम नेता श्री घनश्यामसिंह गुप्त, महाशय कृष्ण, ला. देशबन्धु आदि इस पक्ष में थे कि इस दलदल में न फंसा जाये। नई पीढ़ी के कुछ लोग जिनमें मैं स्वयं भी एक था, इस पक्ष में थे कि राजनीति से दूर रहकर हम संगठन के साथ न्याय नहीं कर रहे, और ऋषि के मन्तव्यों से भी दूर जा रहे हैं।

परन्तु मेरा और जो अन्य भी इस पक्ष में थे कि राजनीति में आया जाये, उन सबका ही (उस समय भी और आज भी) यह विचार दृढ़ है कि आर्यसमाज के सांस्कृतिक और सामाजिक ढांचे को तो ज्यों का त्यों सुरक्षित रहने दिया जाये। जो आर्यसमाज इसमें रुचि रखते हैं उन्हें संगठित रूप दिया जाय। मेरा अपना विचार है कि मेरठ महासम्मेलन में कोई निर्णयात्मक पग उठा लिया गया होता तो आज आर्य समाज की युवा-शक्ति बिखरती नहीं। परन्तु आज भी अगर एक दृढ़ निर्णय ले लें तो अभी बहुत कुछ नहीं बिगड़ा है। आर्य समाज के नेता पंजाब का हिन्दी सत्याग्रह और मथुरा की दयानन्द दीक्षा शताब्दी देखकर भी यदि आर्यसमाज की शक्ति का अनुमान नहीं लगा

पाते तो यह हमारा दुर्भाग्य ही है।

मेरठ में राजनीति वाले प्रस्ताव पर एक उप-समिति बना दी गयी। मथुरा में भी आर्यसमाज के प्रमुख व्यक्तियों ने फिर इस विषय को राजार्य सम्मेलन में उठाया। मेरठ से मथुरा तक इतना तो अन्तर हुआ है कि महाशय कृष्ण और माननीय घनश्यामसिंह गुप्ता तो इन विचारों के हो गये हैं कि राजनीति में आया जाये। परन्तु उसका रूप क्या हो, यह अभी वे नहीं सोच पा रहे हैं।

स्व-राज्य और स्व-धर्म

आर्यसमाज में ऐसे भी कुछ लोग हैं, जो आज भी राजनीति को वारांगना या कीचड़ में हाथ डालना आदि कहकर दूर रहने का परामर्श देते है। इनमें तीन प्रकार के व्यक्ति है, एक तो वे जिनका मस्तिष्क ही इस दिशा में कभी काम नहीं करता, केवल सिद्धान्तवाद अथवा शास्त्र चर्चा को ही वे आर्यसमाज समझ बैठे हैं। इस बात को वे भूल जाते हैं- ''शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचिन्ता प्रवर्त्तते'' अपना राज्य और अपना धर्म इन दोनों का भी अभिन्न सम्बन्ध है। दूसरे, फिर आर्यसमाज स्वयं तो एक संगठन ही है, कोई धर्म तो है नहीं। धर्म के जिस शुद्ध और परिष्कृत रूप को आर्यसमाज के प्रवर्तक ने हमें बताया है, उसमें राजनीति को भी धर्म से अलग नहीं रखा गया। सत्यार्थ-प्रकाश के छठे समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने जहां इसकी चर्चा आरम्भ की है, वहां ''राजधर्मान् व्याख्यास्याम:'' लिखा है।

दूसरे व्यक्ति वे हैं जो सरकारी नौकरी में अथवा सरकारी अधिकारियों के कृपा-पात्र बने रहने में ही अपना हित देखते हैं। तीसरे और भी इस विचार के विरोधी हैं। ये वे लोग हैं जिनका इस तरह के कुछ राजनैतिक संगठनों से लगाव है, जो उन संगठनों के प्रति अपनी वफादरी बनाये रखने के लिए ही यह परामर्श देते हैं कि राजनीति से दूर रहा जाये। दु:ख की बात है, इस समय कांग्रेस से लेकर कम्युनिष्ट तक हमारे इस संगठन में हैं। कुछ प्रत्यक्ष हैं और कुछ अप्रत्यक्ष हैं। अच्छा हो कि हम इन अप्रत्यक्ष काम करने वाले मित्रों से भी सावधान रहें।

परिस्थिति सापेक्षता

कुछ ऐसे भी आर्य जन हैं जो सचमुच ही बिना किसी अन्य कारण के पवित्र भाव से यह अनुभव करते हैं कि कहीं राजनीति में जाने से हम अपने प्रमुख लक्ष्य से भटक तो नहीं जायेंगे? सम्भव है कि कुछ सीमा तक वे ठीक भी सोच रहे हों। परन्तु बड़ी नम्रता से ऐसे महानुभावों से मेरा निवेदन है कि कुछ ऐसे भी

समय आते हैं। जब बड़े-बड़े महात्माओं को भी परिस्थितियों ने मार्ग बदलने पर विवश किया है। समर्थ गुरु रामदास को परिस्थितियों ने ही पुकारा था कि शिवाजी की पीठ पर हाथ रखकर उसे तैयार करें। वन्दा वैरागी को माला छोड़ कर स्वयं फर्रुखसियर के आगे तलवार पकड़नी पड़ी थी। और इसी तरह के वे सब कारण थे जो स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत के प्रथम क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा को लन्दन में छात्रवृत्ति देकर भारतीय स्वाधीनता का शंख फूंकने भेजा था।

एक समय ऐसा था जब धर्म के शुद्ध स्वरूप की रक्षा के लिए आर्यसमाज ने शास्त्रार्थ किया। ऐसा भी एक समय आया जब आर्य नेताओं ने लाठी-गोली और छुरों के भी सामने किये। कभी सत्याग्रह युद्ध में भी हम कूदे। समय के अनुसार अपनी रीति-नीति में हम हेर-फेर करते रहे हैं। परन्तु आज की परिस्थिति हमें पुकार-पुकार कर कह रही है कि हम राजनीति की उपेक्षा न करें। संस्कृति, सभ्यता और धर्म को अंग्रेजों के समय उतना खतरा नहीं था, जितना आज है। धर्म-निरपेक्षता के नाम पर जो वातावरण आज चल रहा है उससे साम्यवाद के लिए रास्ता तैयार होता है। कभी चोटी और जनेऊ के लिए हमारे पूर्वज लड़े थे, आज बहाव में आकर नई पीढ़ी उन्हें स्वयं उतारती जा रही है। धर्म का मजाक उड़ाया जाता है, उसे पिछड़े युग की बात कहकर अजायबघर की वस्तु बतलाया जाता है। स्कूलों, कालेजों में कहीं नाम मात्र को भी थोड़ा बहुत धार्मिक क्रम था तो उसे कानून ने छुड़वा दिया। उधर इस धर्म निरपेक्षता का लाभ उठाकर भारत की अराष्ट्रीय प्रवृत्तियां फिर पनप रही हैं। पाकिस्तान की तरह विदेशी ईसाई पादरी अरबों रुपया बहाकर फिर से देश को एक नए संकट के द्वार पर ले जा रहे हैं। हमारी राष्ट्रीय सरकार धर्म निरपेक्षता के नाम पर यह सब देख रही है।

राजनीति की शुद्धि अनिवार्य

आज की कांग्रेस जिसकी केन्द्र में और प्रदेशों में सरकारें हैं, वह गांधी, तिलक और मालवीय की कांग्रेस नहीं रही। उसमें भी बहुत से कम्युनिस्ट घुस गए हैं। आज के कम्युनिस्टों और कांग्रेस में इतना ही अन्तर है कि वे विदेशी कम्युनिज्म को मानते हैं, और इनका स्वदेशी कम्युनिज्म हैं। कांग्रेस के उच्चत्तम नेता यदि यह सोचते भी हैं कि कभी शासन हमारे हाथ से अगर जाये भी तो फिर ये ही सम्भालें। भले ही परिस्थितिवश वह इस बात को न कहते हों, परन्तु उनके मन में यह चोर छिपा

हुआ है।

ऐसी परिस्थितियों में भारतीय संस्कृति के सभी उपासकों का कर्त्तव्य है कि वे संगठित हों और देश के लिए भावनाओं से ऊपर उठकर विचार करें। पर आर्यसमाज का दायित्व तो विशेष है। स्वस्थ संगठनों का यह चिह्न भी है कि वे अपने लक्ष्य को न भूलते हुए समय के साथ अपनी रीति-नीति में परिवर्तन करते रहते हैं। गम्भीरता से इस विषय पर भी आज हम एक बार फिर से सोचें। यह बात दूसरी है कि उसका रूप क्या था? सिद्धान्ततः यदि यह बात सब मान लेते हैं तो रूप अवश्य सोच लिया जायेगा। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द ने आज से कई वर्ष पूर्व यह भविष्य वाणी लिखित रूप से की थी-कि ऐसा भी समय आयेगा, जब आर्यसमाज को राजनैतिक शुद्धि भी करनी पड़ेगी? मेरी सम्मत्ति में आज वह समय आ गया है। अब स्वामी जी की उस भविष्यवाणी को सार्थक करने के लिए हम कमर कसें। हमारे अधिक से अधिक साथी संसदों और विधान- सभओं में पहुंचे और मूक एवं त्रसित मानवता का सही प्रतिनिधित्व करें। राजनीति के बेलगाम दौड़ते जा रहे घोड़े को संयम और विवेक की लगाम लगायें।

भारत विरोधी बौद्धिक आक्रमण

भारत पर आक्रमण तो हमेशा से होते रहे हैं। पहले उत्तर-पश्चिम सीमा से आक्रमणकारी आते थे। बाद में समुद्री मार्ग से आए और कालांतर में यहीं अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। हिमालय पर्वत श्रंखला से हम उत्तरी सीमा को सुरक्षित समझते थे, किन्तु चीन ने उसे भी पार करके 1962 में हमला किया। ऐसे हमलों से इतर वर्तमान में भारत पर एक ऐसा आक्रमण हो रहा है, जिससे ने केवल अधिकांश जनता, बल्कि हमारे शासक भी अनिभज्ञ से हैं। यह आक्रमण बौद्धिक स्तर पर हो रहा है, जिसका लक्ष्य भारत की सभ्यता और संस्कृति पर ऐसे प्रहार करना है कि यह मूल रूप से नष्ट हो जाए। इस आक्रमण का केन्द्र बिंदु अमेरिका की विख्यात हार्वर्ड यूनिवर्सिटी है। हार्वर्ड के कुछ विद्वानों ने एक नया दर्शन प्रतिपादित किया है, जिसे क्रिटिकल रेस थ्योरी यानी सीआरटी का नाम दिया है। इसके अनुसार वर्तमान व्यवस्था दूषित हो चुकी है और समाज में जो भी अन्याय-शोषण है, वह इसी कारण हो रहा है। भारत के संदर्भ में इसके अनुसार हिंदू धर्म को नष्ट कर देना चाहिए, क्योंकि यह जाति व्यवस्था पर आधारित है,

जिसमें एक वर्ग से दूसरे वर्ग का शोषण करता है। इससें हमारी पारिवारिक व्यवस्था पर भी सवाल उठाए गए हैं। इस दर्शन को मानने वालों के अनुसार यह व्यवस्था पुरुष प्रधान है, जिस कारण महिलाओं का उत्पीड़न और शोषण होता है। हमारे धर्मगुरु बेकार हैं। उन्हें अपदस्थ किया जाना चाहिए, क्योंकि उनके विरुद्ध समय-समय पर शिकायतें मिलती रहती हैं। संस्कृत भाषा को त्याग देना चाहिए, क्योंकि यह मर चुकी है। हिंदू त्यौहारों का कोई औचित्य नहीं। उनसे पानी की बर्बादी से लेकर प्रदूषण तक होता है। वेदों के बारे में कहा गया है कि उनमें जो लिखा है, वही हिन्दू धर्म की कमजोरी, अन्याय और शोषण का आधार है। इसलिए उनका पठन-पाठन बंद कर दिया जाना चाहिए।

संक्षेप में कहें तो इस इस सिद्धान्त का सार यही है कि हिन्दू सभ्यता और हिंदू संस्कृति का विनाश समाज के हित में है और बुद्धिजीवी को इसी दिशा में काम करना चाहिए। दुष्प्रचार का ऐसा प्रहार कई वर्षों से जारी है। इसका प्रतिकार करने के लिए हमें राजीव मल्होत्रा और विजया विश्वानाथन का कृतज्ञ होना पड़ेगा, जिन्होंने अपनी पुस्तक 'स्नेक्स इन द गंगा' में कई चौंकाने वाले तथ्य उजागर किए हैं। वह पुस्तक गहन शोध और अकाट्य तथ्यों के आधार पर लिखी गई है। पुस्तक पढ़ने के बाद पहला सवाल यही कौंधा कि क्या वाशिंगटन स्थित भारतीय दूतावास ने उन बिंदुओं को लेकर भारत सरकार को आवगत कराया था, जिनका पुस्तक में उल्लेख है? मुझे बताया गया कि ऐसी कोई चेतावनी नहीं आई थी। आखिर हमारे दूतावासों के अधिकारी क्या करते रहते हैं? भारत की सभ्यता और संस्कृति पर हार्वर्ड से इतना बड़ा प्रहार होता है और उसके बारे में वे सरकार को कुछ नहीं बताते? क्या खुफिया एजेंसी 'रा' ने इस संबंध में रिपोर्ट भेजी थी? यदि हां, तो उस पर कार्यवाही हुई और यदि नहीं तो उनकी भी जवाबदेही होनी चाहिए।

अफसोस की बात यह है कि इस बौद्धिक प्रहार के पीछे हार्वर्ड में कार्यरत कई भारतीय भी हैं। उनमें से एक हैं प्रोफेसर अजंता सुब्रमण्यम। उन्होंने एक किताब लिखी है जिसमें भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों यानी आइआइटी पर सवाल उठाया है। उनके अनुसार ये संस्थान फैक्ट्री की तरह काम कर रहे हैं और जातीय असमानता को स्थायित्व दे रहे हैं, इसलिए इन्हें बंद कर दिया जाना चाहिए। वास्तविकता तो यही है आइआइटी के छात्र अमेरिका सहित दुनिया भर के संस्थानों में छाए हुए हैं और जब उनसे प्रतिस्पर्धा नहीं हो पा रही तो उन्हें ही बंद कराने का दुष्प्रचार शुरु कर दिया गया । कैनेडी स्कूल में सीनियर फेलो सूरज

यंगडे हिंदू धर्म पर अनर्गल प्रलाप करते रहते हैं। धेनमोझो सौंदर्यराजन कई राज्यों में हिंदुओं के खिलाफ मुकदमें दर्ज करा रही हैं। उनके अनुसार हिंदुओं के विरुद्ध नस्लवाद का आरोप बनता है।

मल्होत्रा के अनुसार हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की घुसपैठ भारत के अधिकांश वर्गों में हो चुकी हैं। सरकारी अधिकारी हार्वर्ड जाना बड़े गर्व की बात समझते हैं और वहां के ज्ञान को बिना सोचे - समझे निगल जाते हैं। लगभग यही हाल मीडिया के कई प्रतिनिधियों का भी है। उद्योग जगत् के बड़े-बड़े दिग्गज हार्वर्ड को दान देकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं। अशोका यूनिवर्सिटी खुद को बड़े गर्व से 'भारत का हार्वर्ड' कहलाती है। दूसरी तरफ मोदी जी कहते हैं कि गुलामी के सारे निशानों को मिटा दिया जाए, लेकिन दिमागी गुलामी से हम कब स्वतंत्र होंगे?

मल्होत्रा और विश्वनाथ ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी को सांपों का घरौंदा बताया है। दुर्भाग्य है कि इन सांपों को हम हिंदुस्तान से दूध पिला रहे हैं। टाटा समूह ने हार्वर्ड को पांच करोड़ डॉलर दान में दिए हैं। लक्ष्मी मित्तल समूह ने 2.5 करोड़ डॉलर और महिन्द्रा समूह ने एक करोड़ डॉलर। इन दानवीरों से पूछा जाए कि यदि उन्हें दान देना ही था तो क्या उस राशि का सदुपयोग सुनिश्चित किया? साथ ही यह भी कि आपने इतनी संपदा विदेशी संस्थानों को दी तो उसकी तुलना में भारतीय संस्थानों को कितना दान दिया हैं?

हार्वर्ड के तथाकथित विद्वानों के अनुसार भारत की जाति व्यवस्था पश्चिम की नस्लीय व्यवस्था जैसी है। उन्होंने भारत की उच्च जातियों की तुलना अमेरिका के श्वेत श्रेष्ठतावाद वाली ग्रंथि से की है और भारत के दलितों को अमेरिका अश्वेतों के समकक्ष बताया है। जाति और नस्ल को एक जैसा समझना दिमागी दिवालियेपन का प्रतीक है। दोनों की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एकदम अलग है, परंतु अमेरिकी बुद्धिजीवी दोनों को एक तराजू पर तौलकर भारतीयों के अमेरिका में आस्तित्व को और विशेष तौर से हिन्दुओं की पहचान समाप्त करना चाहते हैं। हैरत की बात यह है कि यही बुद्धिजीवी इस्लाम को पीड़ित बताते हैं।

भारत सरकार को चाहिए कि इन खतरों की गंभीरता का उचित आकलन कर उनसे निपटने की आवश्यक योजना बनाए। अमेरिका से होने वाला बौद्धिक प्रहार हमारे अस्तित्व को चुनौती देता है इस शास्त्रार्थ में भारत को पश्चिम की आसुरी शक्तियों को परास्त करना पड़ेगा।

उत्तर प्रदेश पुलिस के महानिदेशक रहे **लेखक सामाजिक संस्था 'हमारी संस्कृति' के अध्यक्ष हैं।**

मधुमेह (डायबिटीज) का उपचार

रोग की चिकित्सा से पहले रोग के बारे में जानकारी यदि हो तो चिकित्सा उपक्रम के अनुपालन की संभावना बढ़ जाती है व असाध्य रोग भी साध्य हो जाता है। चिकित्सा संबंधी लेखों में प्राय: रोगी दवाइयों के बारे में अधिक जानना चाहते हैं। दवाइयों के सेवन के साथ पथ्यापथ्य, भक्ष्याभक्ष्य समुचित दिनचर्या, ऋतुचर्या, संयमित व सक्रिय जीवन शैली, व्यायाम, योगासन, प्राणयाम, मंत्रोच्चारण, ध्यान, यज्ञ, संध्योपासना, प्रार्थना आदि क्रियाओं का रोगनिवारण के लिए अत्यंत महत्व है। आधुनिक चिकित्सक भी इनके महत्व को समझने लगे हैं और परामर्श देने लगे हैं। मेरे लेखों में आयुर्वेदिक व आंग्ल दोनों मतों का विवरण रहता है। रोगी आवश्यकतानुसार लाभ उठा सकते हैं।

परिचय : मधुमेह यानि डायबिटिज को साधारण भाषा में शूगर की बिमारी कहते हैं। यह कोई आधुनिक काल का रोग नहीं है अपितु चिकित्सा के पुरातन ग्रंथों चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टांग संग्रह तथा इतर लघु ग्रंथों में भी इसका वर्णन मिलता है। आयुर्वेद में मधुमेह का प्रसंग प्रमेह रोगों में मिलने के कारण कई बार प्रमेह और मधुमेह के अंतर में भ्रम हो जाता है। प्रभूताविल मूत्रता प्रमेह से मूत्र अधिकता व आविलता के लक्षणों वाले समस्त रोगों व रोगावस्थाओं के रोग प्रमेह के अंतर्गत आते हैं यह जान लेना चाहिए। मधुमेह के हेतु लक्षण संप्राप्ति पूर्वानुमान पूर्वरूप आदि का वर्णन स्वतंत्र रूप से प्राप्त है। ''मधुरं यच्च मेहेषु प्रायो मध्विव मेहति'' से मूत्रशर्करा और ''सर्वे अपि मधुनेहाख्या माधुर्याच्च तनोरत:'' से रक्तशर्करा का बोध होता है। अर्थात् मधुमेह में मूत्रशर्करा और रक्तगतशर्करा दोनों की उपस्थिति होती है यह पूर्व विदित है। क्षौद्रमेह और ओजोमेह इसके पर्याय कहे गए हैं।

पाश्चात्य चिकित्सा के दृष्टिकोण से आहार रस से प्राप्त गलूकोज को यकृत् ग्यालकोजन में परिवर्तित कर देता है। यह कुछ यकृत् व कुछ पेशियों में संचित हो जाता है। आवश्यकता पड़ने पर यह किण्वीकरण के द्वारा पुन: गलूकोज में परिवर्तित होकर पेशियों को शक्ति प्रदान करने के काम आता है। साधारणत: रक्त में इसकी मात्रा 80-160 मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर होती है। रक्त में शर्करा सामान्य से अधिक होने पर अथवा इसका समवर्तन/ उपयोग ठीक न होने पर अधिक शर्करा वृक्कों की मर्यादा को अतिकांत कर छन कर मूत्र में आ जाती है। इस प्रकार रक्त और मूत्र दोनों में शर्करा के बढ़

जाने से उत्पन्न उपद्रवों से युक्त व्याधि को मधुमेह कहते हैं।

आहार से प्राप्त शर्करा यानि कार्बोहाईड्रेट ग्लूकोज अर्थात् संक्षेप में कार्बोज के समवर्तन अर्थात् चयापचय, जिसे अंग्रेजी में मेटाबालिज़म कहते हैं, में कुछ अंत:स्रावी ग्रंथियों के स्रावों का भी महत्वपूर्ण रोल रहता है। अग्नाशय (पेंक्रियाज),थाइराइड, अधिवृक्क ग्रथियां व पिच्यूटरी ग्रंथि के अंत:स्राव कार्बोज के समवर्तन को नियंत्रित करते हैं। विशेषत: पेंक्रियाज का अंत:स्राव इंसूलीन रक्त में मिलकर पेशियों के द्वारा शर्करा का उपयोग व इसे यकृत् में संचय कराता है। इंसूलीन की कमी होने पर पेशियां अपने कार्य संपादन करने के लिए शर्करा का उपयोग नहीं कर पाती व यकृत् इसे संचय नहीं कर पाता है।

परिणामस्वरूप रक्त में शर्करा बढ़ जाती है और वृक्क मर्यादा का अतिक्रमण होकर यह मूत्र द्वारा निकलने लगती है। शरीर के अनेक अंगों को प्रभावित कर दोष दुष्टि कर, शरीर के भीतर के वातावरण व संतुलन को विकृत कर अनेक उपद्रवों को करती हुई शरीर में कष्ट उत्पन्न करती है। इसे ही मधुमेह कहते हैं। इसकी पुष्टि जांचने पर मूत्र का विशेष गुरुत्व बढ़ जाने से, रक्तगत शर्करा की मात्रा 160 मिली प्रतिशत से बढ़ जाने, रक्त गत एचबीए1सी की मात्रा, सामान्य 6.5 प्रतिशत से अधिक हो जाने से होती है।

हेतु: मधुमेह के कारणों पर गौर करने से देखा गया है कि यह - 1. वंशानुगत जेनेटिक रोग है। 2. स्टैस यानि तनावपूर्ण जीवन - हानि, मृत्यु, शोक, अवसाद, संबंध विच्छेद की अति संवेदन शीलता से, 3. संतर्पण कारक आहार सेवन व आरामतलबी भरा जीवन जीने से, अम्लीय व लवणीय पदार्थों के सेवन से अकर्मण्यता, मोटापा से, अत्यधिक मीठा व कार्बोज युक्त पदार्थों के सेवन से कोल्ड ड्रिक्स व फास्ट फूड के सेवन से, आधुनिक जीवन शैली से 4. स्टोरॉयड व अनेक अन्य अंग्रेजी दवाइयों के अनुचित प्रयोग से मधुमेह नामक यह रोग भारत सहित विकसित देशों में तेजी से फैल रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह धनी देशों व बाजार द्वारा किसी षड्यन्त्र के तहत फैलाया जा रहा है। आने वाले निकट वर्षों में भारत दुनियां की डाइबिटीज कैपिटल हो जाने की भविष्यवाणी की जा रही है। आयुर्वेद में एक श्लोक इस प्रकार है- "आस्यासुखं स्वप्नसुखं दधिनी ग्राम्योदक आनूपरसा: पद्धति नवान्नपानं गुड़वैकृतं च प्रमेह हेतु कफकृच्च सर्व। इसमें संतर्पण जन्य मधुमेह के हेतुओं का विवरण मिलता है। अपतर्पण अर्थात् शारीरिक धातुओं के क्षय अर्थात् भार घट जाने की अवस्था भी मधुमेह

रोगियों में देखी जाती है। आधुनिक चिकित्सा में भी डायबिटीज को दो प्रकार में बांटा गया है। **टाईप 1. अपतर्पण से**- यह इसूलीन डिपेंडेट होती है व इसका एकमात्र उपचार इंसूलीन पर निर्भर है और इसे असाध्य कहा है। **टाईप 2. संतर्पण से** - यह नॉन-इंसूलीन डिपेंडेंट होती है अर्थात् यह बिना इंसूलीन के केवल औषधियों से साध्य होती है। जो भी है मधुमेह के दोनों प्रकार के रोगी समय पर समुचित दवाई लेने से व आहार तथा दिनचर्या में सुधार से और शारीरिक सक्रियता व मानसिक तौर पर स्वस्थ रहने से नीरोग व कष्ट रहित जीवन जीते हुए देखे जा सकते हैं।

लक्षण : सामान्यत: मधुमेह का रोगी शरीर में कमजोरी व अंगों में शिथिलता की शिकायत लेकर आता है। मधुमेही को अत्यंत प्यास लगती है। वह बहुमूत्रता से ग्रस्त होता है। हाथ व पैरों के तलवों में जलन रहना व दर्द होना, मूत्र के स्थान पर चींटियों का लगना व बिस्तर पर भी चीटियों का पाया जाना हो सकता है। कई बार शरीर के वजन में एकाएक कमी आ जाती है। प्राय: रोगी को पता ही नहीं चलता, आकस्मिक रक्त या मूत्र आदि की जांच से ही पता चलता है।

चिकित्सा: मधुमेह की चिकित्सा के लिए रोगी को खुद (स्वयं) चिकित्सक बनना पड़ता है तथा रोग मुक्ति चाहने वाले को निदान अर्थात् हेतु कर दृढ़ता से त्याग करना पड़ता है। सर्वप्रथम पथ्यापथ्य की अनुपालना करते हुए मीठा व मीठी खाद्य वस्तुओं का परहेज रखना चाहिए। कार्बोज युक्त पदार्थों जैसे चीनी, चावल, मैदा, आलू व मिठाइयों का त्याग कर देना चाहिए। दूध, दही व घी आदि का अधिक सेवन वर्ज्य है। सुबह शाम को टहलना, सैर करना अनिवार्य है। आलस्य को शत्रु समझ कर त्याग देना चाहिए। आहार में कड़वे पदार्थों का सेवन निर्देशित है। धन, ऐश्वर्य, गर्व, घमंड व आराम सुख को छोड़ कर सादा जीवन जीना चाहिए व रूखा-सूखा भोजन करना चाहिए। मधुमेह में पैदल चलना, व्यायाम करना व कसरत करना अति लाभकारी है। सूर्य की धूप व खुली वायु में कुछ देर कार्य या श्रम करना चाहिए। मधुमेह में पथ्यापथ्य प्रथम इसलिए कहा जाता है कि यह औषधियों से अधिक लाभकारी होता है। कई रोगी केवल परहेज व परिश्रम करने से ही रोग मुक्त हो जाते हैं।

मधुमेह की आयुर्वेदीय चिकित्सा में आंवला, हल्दी, करेला, गूलर, जामुन की गुठली, मेथी, गुड़मार, विजयसार, त्रिफला, करंज, नीम आदि द्रव्यों का चूर्ण, क्वाथ, फांट, रस व लेह आदि उपयोगी है। शास्त्रीय योगों में त्रिफलादि क्वाथ, न्यग्रोधादि चूर्ण, शिलाजत्वादि वटी,

चंद्रप्रभा वटी, आरोग्यवर्धिनी रसवटी, बसंत तिलक रस, वसंतकुसुमाकर रस आदि अनेक योगों का रोग की दोष दूष्य अवस्थानुसार व चिकित्सकों के अनुभवों के आधार पर प्रयोग कराया जाता है। ये औषधियां चिकित्सकों के परामर्श के अनुसार ही सेवन करनी चाहिएं। लेखक के निज अनुभव में विजयसार आदि क्वाथ, आरोग्य वर्धिनी रस व शिलाजत्वादि वटी का प्रयोग स्वतंत्र रूप से तथा अंग्रेजी औषधियों के साथ भी प्रयोज्य है। कभी किसी रोगी का शूगर जब सामान्य औषधियों से नियंत्रित नहीं होता तब इन औषधियों का कॉकटेल काम दे देता है। शूगर के रोगी की रक्त शूगर सामान्य प्रतिशत में ले आना ही चिकित्सक का लक्ष्य रहता है। इसकी नियमित जांच करते रहने से ही पता चलता है। रक्त शूगर के अतिरिक्त रोगी के लीवर (यकृत्) व गुर्दो (वृक्क) की जांच भी रक्त जांच से हमें सामान्यतः डायबिटीज नियत्रंण की मोनिट्रिंग तथा डायग्नोसिस में सहायता मिलती है। आयुर्वेदिक चिकित्सकों को भी विज्ञान की नूतन विधियों का लाभ उठाना चाहिए। जब समस्त आंग्ल चिकित्सा प्राचीन चिकित्सा के मौलिक ज्ञान बोध का उपयोग करती हो तो आयुर्वेदिक चिकित्सकों को भी आधुनिक ज्ञान का परहेज नहीं करना चाहिए।

अंग्रेजी औषधियों के प्रथम प्रकार के रोगियों को जो इंसुलीन पर निर्भर हैं या जो बाल्यकाल से ही डायबिटीज हैं उनका तुरंत प्रभावी व चिरप्रभावी दोनों प्रकार की इंसुलीन से शूगर कंट्रोल रखा जाता है। द्वितीय प्रकार के रोगियों में पेंक्रियाज ग्रंथी में इंसूलीन कम बनती है अथवा लीवर व पेशियों में इंसूलीन का असर नहीं होता ऐसे में चिकित्सक मैटफोर्मीन इंसूलीन का उत्पादन बढ़ाने वाली ग्लीपटीन व वृक्कों पर काम करने वाली एसजीएलटी 2 अवरोधक वर्ग की विभिन्न प्रकार की दवाइयों के रक्तगत शर्करा को कंट्रोल करने का प्रयास रहता है। बढ़ी हुई रक्त शर्करा शरीर के विभिन्न अंगों को हानि पहुंचाकर कई उपद्रवों को उत्पन्न करती है। चिकित्सकों की कोशिश रहती है कि किसी प्रकार रक्तगत शर्करा सामान्य मात्रा में रहे व रोगी उपद्रवों से बचे रहें व उनका जीवन सुख पूर्वक गुजरे। मधुमेहजन्य उपद्रवों व उनकी चिकित्सा की चर्चा अगले अंकों में करेंगे। सर्वे संतु निरामयाः।

डॉ. नरेश दलाल,
सामान्य व हृदयरोग विशेषज्ञ, झज्जर।

****

शोक सूचना

स्वामी ओमानन्द जी के विशेष सहायक, स्वामी प्रणवानन्द जी के बड़े भाई गौरीपुर (भिवानी) निवासी श्री महाशय मामराज आर्य का 100 वर्ष की आयु में 5 अक्टूबर 2022 को निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र-पुत्रियों, पौत्र-पौत्रियों और दौहित्र-दौहित्रियों से युक्त भरे परिवार को छोड़ गये हैं। इनकी अन्त्येष्टि ग्राम गौरीपुर में पूर्ण वैदिक रीति से की गई। इनके बड़े पुत्र सत्यवीर शास्त्री ने मुखाग्नि दी। इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द जी, रामपाल शास्त्री, डॉ. ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, भूपेश शास्त्री, डॉ. निखिल शास्त्री, आचार्य विजयपाल योगार्थी, विरजानन्द दैवकरणि, महावीर शास्त्री, जयपुर हाई कोर्ट के वकील वेदपालशास्त्री, आचार्य प्रवीण चरखी दादरी, अजय कुमार शास्त्री भाण्डवा, सुरेन्द्र शास्त्री खातीवास, यशवन्त शास्त्री दाघिया, जयवीर शास्त्री कुण्डल, उमेद शर्मा भिवानी, आजाद सिंह आर्य, मा. सूरत सिंह आर्य, शेर सिंह आर्य नीमड़ीवाली, जगमाल सिंह आर्य एडवोकेट, परिवार के सभी सदस्य आदि अनेक महानुभाव तथा गौरीपुर ग्राम के सैंकड़ों व्यक्ति उपस्थित थे। शान्तियज्ञ तथा प्रेरणा सभा 11 अक्टूबर 2022 को ग्राम गौरीपुर में की गई। दिवंगत आत्मा की सद्गति और शोकसन्तप्र परिवार के धैर्य के लिए सभी आगन्तुकों ने ईश्वर से प्रार्थना की। ईश्वर उन के आत्मा को कर्मानुसार श्रेष्ठ योनि प्रदान करेंगे, यही आशा और कामना है।

- सम्पादक सुधारक

अत्यन्त खेद के साथ सूचित किया जाता है कि गुरुकुल झज्जर की प्रबन्धकारिणी सभा के प्रधान चौ. पूर्णसिंह जी देशवाल का निधन 12 नवम्बर 2022 को हो गया। इनकी अन्तेष्टि उनेक ग्राम भदानी में की गई। अन्तेष्टि पूर्ण वैदिक विधि से आचार्य विजयपाल जी के निर्देशन में की गई। उस समय ग्राम के सैंकड़ों शोकाकुल जन उपस्थित थे।

इस हार्दिक वेदना के समय गुरुकुलपरिवार की ओर से शोकसन्तप्र परिवार को धैर्यधारण करने हेतु तथा ईश्वर से दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु प्रार्थना की गई।

-सम्पदाक सुधारक

हमारी विशिष्ट औषधियाँ

संजीवनी तैल

यह तैल घाव के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुए घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भरकर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों में और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है।

मूल्य : 100 रुपये

च्यवनप्राश

शास्त्रोक्त विधि से तैयार किया हुआ स्वादिष्ट सुमधुर और दिव्य रसायन (टॉनिक) है। इसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खांसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक तथा सभी हृदयरोगों की उत्तम औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका निरन्तर सेवन समूल नष्ट करता है। निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है। च्यवन ऋषि इसी रसायन के सेवन से जवान होगये थे।

मूल्य : 1 किलो 300 रुपये

नेत्रज्योति सुर्मा

सुर्मे तो बाजार में पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं परन्तु इतना लाभप्रद और सस्ता सुर्मा मिलना कठिन है। इसके लगाने से आंखों के सब रोग जैसे आंखों से पानी बहना, खुजली, लाली, जाला, फोला, नजर की कमजोरी आदि विकार दूर होते हैं तथा बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। दुखती आंखों में भी इसका प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है।

मूल्य : 50 रुपये

बलदामृत

हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आजाता है। पीनस (सदा रहनेवाला जुकाम और नजले) की औषधि है। वीर्यवर्धक, कासनाशक, राजयक्ष्मा, श्वास (दमा) के लिए लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करता है तथा अत्यन्त रक्तवर्धक है।

मूल्य : 200 रुपये

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर

गुरुकुल झज्जर के प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि मुनि)	४०-००
३.	कारिकाप्रकाश (पं० सुदर्शनदेव)	२५-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (पं० सुदर्शनदेव)	१५-००
५.	फिट्सूत्रप्रदीप (पं० सुदर्शनदेव)	१०-००
६.	अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग) "	६५०-००
७.	काव्यालंकारसूत्राणि (आचार्य मेधाव्रत)	२५-००
८.	दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
९.	दयानन्ददिग्विजयम् (१-२ भाग) "	३५०-००
१०.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (पं० चन्द्रमणि)	२५०-००
११.	योगार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	२०-००
१२.	सांख्यार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	८०-००
१३.	मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१४.	महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१५.	दोग्योपनिषद्भाष्यम् (पं० शिवशंकर)	२५०-००
१६.	जनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
१७.	वैदिक गीता (स्वामी आत्मानन्द)	६०-००
१८.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प "	३०-००
१९.	दयानन्दप्रकाश (स्वामी सत्यानन्द)	८०-००
२०.	धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	८०-००
२१.	वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२२.	देशभक्तों के बलिदान	१५०-००
२३.	सत्यार्थप्रकाश (स्वामी दयानन्द)	२००-००
२४.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
२५.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (स्वामी दयानन्द)	५-००
२६	व्यवहारभानु (स्वामी दयानन्द)	१५-००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योग	४०-००
२८.	चारों वेद मूल	८८०-००
२९.	सामपदसंहिता	२५-००
३०.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३१.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३२.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	३५-००
३३.	घर का वैद्य (वैद्य बलवन्तसिंह) १-५ भाग	१००-००
३४.	संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
३५.	स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३६.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१२००-००
३७.	ब्रह्मचर्य के साधन (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
३८.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-१) "	६००-००
३९.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००
४०.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४१.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	४५०-००
४२.	प्राचीन भारत में रामायण के मन्दिर	२००-००
४३.	नौरंगाबाद की मृन्मूर्तियां	२५०-००
४४.	अगरोहा की मृन्मूर्तियां	८००-००
४५.	प्राचीन ताम्रपत्र एवं शिलालेख	२००-००
४६.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-२)	३००-००
४७.	छन्दःसूत्रम् (हिन्दी भाष्य सहित)	१२०-००
४८.	आर्य सत्संग पद्धति	१०-००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री _____

स्थान _____

डा० _____

जिला _____

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-डॉ० विक्रम सिंह शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।